महामहिम राज्यपाल श्री राम नरेश यादव का गांधी जयंती पर आयोजित सर्वधर्म प्रार्थना सभा में उद्बोधन

दिनांक :- 2 अक्टूबर, 2012 स्थान:- गांधी भवन, भोपाल समय :- प्रात: 9.30 बजे

सर्वप्रथम में महात्मा जी की जयंती पर उनका पुण्य स्मरण करते हुए उनके चरणों में अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित करता हूं।

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने महात्मा गांधी की मृत्यु के बाद आकाशवाणी से देश को संबोधित करते हुए कहा था कि "हमारे जीवन से ज्योति चली गयी है, सब तरफ अंधेरा है... पर मैं गलत कह रहा हूं, उस प्रकाश ने इस देश को सालों से जगमग रखा और सालों तक जगमग रखेगा। देश और विश्व को रास्ता दिखायेगा। अनगिनत हृदय इस ज्योति से शांति पाते रहेंगे...।"

छह दशक से अधिक बीत चुके इस बात को कहे हुए। इस बीच दुनिया ने लगातार इस बात की पुष्टि होते हुए देखी है। अमेरिका के मार्टिन लूथर किंग, दक्षिण अफ्रीका के नेलसन मंडेला और पोलैंड के वालेसा इस बात के साक्षी हैं कि साबरमती के संत ने जो रास्ता दिखाया था, वह समूची मानवता के विकास और उसकी उपलब्धियों का रास्ता है। गांधीजी जीवन भर उस सत्य के आग्रही रहे जिसे वे ईश्वर मानते थे।

वे कहा करते थे - "पहले मैं समझता था कि ईश्वर ही सत्य है, अब समझ गया हूं कि सत्य ही ईश्वर है।'' गांधी का सत्याग्रह इसी ईश्वर की आराधना थी। उनका मानना था कि शुद्ध सत्य का आचरण ही व्यक्ति को सत्याग्रही बनाता है। इसी सोच ने गांधी को महामानव बनाया था- और यही सोच मनुष्य को राह भी दिखाता है।

अहिंसा के पुजारी ने जीवन में जो आलोक बिखेरा था, वह आज भी मनुष्यता की राहों को आलोकित कर रहा है।

महात्मा गांधी की दृढ़ मान्यता थी कि सम्पूर्ण अहिंसा ही उत्तम वीरता है। वह कहते थे कि सत्य के बाद अहिंसा ही संसार में सबसे बड़ी शक्ति है।

देश को इस महान राष्ट्रभक्त संत पर गर्व है। संयुक्त राष्ट्र संघ ने उन्हें स्मरण करते हुए सर्वसम्मति से उनके जन्म दिन 2 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाने का निश्चय किया। तब से अंतर्राष्ट्रीय जगत में आज का दिन अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

आइंस्टाइन ने गांधी जैसे व्यक्ति के होने को एक चमत्कार माना और कहा कि आने वाली पीढियां इस बात पर विश्वास नहीं कर पायेंगी कि गांधी जैसा हाड़-मांस का कोई व्यक्ति इस धरती पर हुआ था लेकिन कदम-कदम पर दुनिया ने इस साकार विश्वास का अनुभव किया है।

वर्तमान संदर्भों, हालातों और परिस्थितियों में गांधी द्वारा प्रशस्त किये गये आलोक-पथ को एक बार फिर से समझना -समझाना जरूरी हो गया है।

सत्य, अहिंसा,सत्याग्रह आदि से लेकर साध्य और साधन की पवित्रता, पंक्ति में खड़े आखिरी आदमी के हितों की चिंता जैसे गांधी के हथियार मनुष्यता की विजय-गाथा के माध्यम हैं। नेहरू ने जिस ज्योति की बात की थी, उसे इन्ही संदर्भों में समझना होगा। नेहरू ने कहा था,“हमारे जीवन से कभी न जा पाने वाली वह ज्योति निकट अतीत से कहीं अधिक का प्रतिनिधित्व करती है। यह शाश्वत सत्य की प्रतिनिधि है, जो हमें हमेशा सही राह की याद दिलायेगी।’’

उस प्रकाश-पुंज को स्मरण करना अपनी राहों को आलोकित रखने का प्रयास है। दुनिया

भर के देशों में आज गांधी को फिर से याद किया जा रहा है। जरूरी हो गया है कि अंधेरों के खिलाफ लड़ी जा रही लड़ाई को धार देने के लिए गांधी के हथियारों को फिर से देखा-परखा जाए।

इस धरती पर जहाँ-जहाँ गांधीजी के चरण पडे वहाँ-वहाँ तीर्थ स्थान बन गये। भारत के हृदय स्थल में स्थित मध्यप्रदेश को भी यह गौरव प्राप्त है।

अविभाजित मध्यप्रदेश में सन 1918 से 1942 तक गांधीजी ने दस यात्राएं की। इन यात्राओं में उनका सत्रह दिवसीय ऐतिहासिक हरिजन दौरा भी शामिल है जिसके दौरान वे दूर-सुदूर छोटे से छोटे गांव भी गये। गांधीजी की यात्राएं कोई साधारण यात्राएं नहीं होती थी। उनके व्यक्तित्व के साथ-साथ एक समूचा विचार दर्शन तथा एक समग्र जीवन पद्धति भी चलती थी। उनके स्वागत तथा व्यवस्था में लगे सहस्त्रों नर-नारियों को भी इस पद्धति से परिचित होने का अवसर मिलता था।

एक स्थान पर उनके आगमन का संबंध मात्र उस स्थान से ही नहीं वरन उस क्षेत्र की समूची जनता से होता था और दूर-दूर से लोग उनका भाषण सुनने आते थे।

इस प्रकार गांधीजी द्वारा की गई यात्राएं उस क्षेत्र के व्यक्तित्व को ही आमूल-चूल परिवर्तित करने में समर्थ हुई।

इस अवसर पर आज यहां बापू की मध्यप्रदेश यात्राओं पर और समकालीन महापुरूषों के गांधीजी के प्रति उद्गारों पर केन्द्रित स्थायी चित्र प्रदर्शनियों का आयोजन भी महत्वपूर्ण है।

पुन: एक बार बापू की पावन स्मृतियों के प्रति शीश नवाते हुए उन्हें शत-शत नमन।

धन्यवाद।

जय हिन्द!